VOL- VIII ISSUE- XI NOVEMBER 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

हिंदी साहित्य में सांप्रदायिकता के साथ संवैधानिक मूल्यों का दर्शन

डॉ. मालती धोंडोपन्त शिंदे
नारायणराव वाघमारे महाविद्यालय
आ.बालापुर, जी. हिंगोली (431701) महाराष्ट्र

लोगों को धर्म के नाम पर बाँटनेवाली संकीर्ण विचारधारा को सांप्रदायिकता कहा जाता है। यह विभिन्न धर्मावलंम्बियों में परस्पर जरुन और अलगाववाद को बढ़ावा देती है। भारत मे हिन्दू,मुसलमान,शिख ईसाई आदि धर्मो को माननेवाले लोग रहते है।।

परिभाषा- आर.डी. लैबर्ट- सांप्रदायिकता को ऐसा उपनाम बताया है जो समाज विरोधी लालसा और प्रक्रियावादी सामाजिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है।। डी. ई. स्मिथ का कहना है कि सांप्रदायिकता को साधारणतया किसी धार्मिक समूह के सीमित,स्वार्थी,विभाजक और आक्रमण शील दृष्टिकोण से जोड़ा जाता है। मानव के बीच बिखराव का मुख्य कारण धर्म ही है। दर्शनशास्त्र भले ही कहता हो सामंजस्य रखना ।।

अठारहवी शताब्दी के अंत मे अरब राष्ट्रों में धार्मिक आंदोलन चला जिसे वहाबी आंदोलन कहा जाता है।भारतीय मुस्लिम नेता सैय्यद अहमद बरेलवी हज के लिए1820 में मक्का पहुँचे।वे इस आंदोलन से इठने प्रभावित हुए की भारत पहुंचकर इसे भारत मे भी लोकप्रिय बना दिया। वहाबिवादियो ने 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अतः क्रांति के तुरंत बाद इसे कुचल दिया गया। कुछ विद्वानों की दृष्टि में यह आंदोलन अंग्रेज विरोधी होने के साथ साथ हिंदुओं और शिखो के विरुद्ध भी एक जिहाद था। अतः इसने भारत मे सांप्रदायिकता उत्पन्न करने में विशेष योगदान दिया। सांप्रदायिक तनाव को दूर करने के लिएऐतिहासिक पहलुओं का प्रचार प्रसार करना चाहिए जिनमे हिन्दू मुसलमान अथवा विभिन्न धर्मों के लोगो ने मिलकर राष्ट्रोत्थान के लिए प्रयास किये और कुर्बानिया दी इससे राष्ट्रीय भावनाएं बलवती होगी।" हम यह भी जानते है की 1857 की लड़ाई दौरान हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सहमति के बिंदुओं में से एक जिसने इस तरह मजबूत गठबंधन बनाया,देश मे गो-वध पर रोक थी।"

1 . मुहम्मद इकबाल और सैयद अहमद खां को मुस्लिम कल्याण के पक्षधर के रूप में तो हम सब अच्छे से जानते पहचानते है। मगर उनके दूसरे पहलू को भुला रहे है। ये मुहम्मद इकबाल वही है। जिन्होंने कभी कहा था-"मजहब नही सिखाता, आपस मे बैर रखना, हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा,सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ता हमारा।" सैय्यद अहमद खां ने पटना में मुस्लिम एकता व उनकी अभिन्नता पर जोर देते हुए कहा कि, हिन्दू तथा मुस्लिम दोनो ही भारत की धरती से उपजा अन्न खाते है। वे एक ही वायु में सांस लेते है। तथा उनके शरीर का रंग भी एक सा हो गया है। हमे सदैव स्मरण रखना चाहिए कि पंच तत्व महतत्वो से बनी इस देह को धारण करनेवाली कोई भी आत्मा न

किसी से छोटी होती है,न बडी, सब एज है,एक समान है।देश में सांप्रदायिकता के विष को समूल नष्ट किया जा सके इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग,जाती, धर्म के प्रत्येक व्यक्ति और सरकार दोनो के सामूहिक प्रयास आवश्यक है। "1945 से पूर्व मुस्लिम लीग बहुसंख्य भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व होने का दावा नही कर सकती थी। दूसरी और, सदस्यता और दृष्टिकोण की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस में हिन्दू हितों का जोरदार प्रतिनिधित्व होने के बावजूद यह कोई हिन्दू पार्टी नही थी और इसका चरित्र भी मोठे तौर पर धर्मनिरपेक्ष था।" 2. सांप्रदायिकता पर व्यापक काम करने वाले विद्वान प्रसिद्ध इतिहासकार बीपीबचन्द्र का कहना है कि राष्ट्रवाद का कोई सांप्रदायिक संस्करण नही होताहै।वास्तव में राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक दोनो परस्पर विरोधी राजनैतिक अवधरणा ये है।राष्टवाद जनता की सामूहिक चेतना की परिणति होता है यह संकृति और नागरिक एकता की ठोस आधारभूमि पर चलकर आता है।" इसीलिये भारतीय राजनीतिक प्रक्रिया में आरंभ से ही एक आधारभूत सांप्रदायिक दृष्टिकोण अपनाया गया जिसके तहत भारत के विविध प्रकार के लोगों को एकता के सूत्र में पिरोने के बजाय विभिन्न समुदायों और उनके नेताओ में एकता स्थापित करने के प्रयत्न कियर गए।" 3. वैसे तो व्यापारी और उद्योगपति लोग सांप्रदायिकता से दूर ही रहना पसंद करते है।लेकिन प्रशासन द्वारा सहिन्त व्यवस्था की अपनी जिम्मेदारी न निभाने पर ये लोग भी अपने व्यवसाय और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए अपने अपने संप्रदाय के साथ जुड़ जाते है। " सांप्रदायिकता एक ऐसी चीज है जो बुद्धि का विरोध किये बगैर आगे नही बढ़ सकती यह यथार्थ का वास्तविक ज्ञान हासिल करने की बजाय अर्ध सत्यों और झूठी अफवाहों पर जिंदा रहती है। वह विद्वेश और घृणा जैसे भावो को उत्तेजना और उन्माद के छोर तक ले जाकर और सहयोग तथा प्रेम जैसे बुनियादी भावो को नष्ट करके मनुष्य को आत्महीन तो बनाती ही है, बुद्धि और विवेक के प्रखर आध्यात्मिक औजारों से भी वंचित कर देती है।" 4. कॉग्रेस और राष्ट्रीय नेतृत्व उन सामाजिक-सांस्कृतिक वर्जनाओं,अलग रहने की प्रवृति और संकीर्णता के विरुद्ध एज अभियान का गठन करने में भी असफल रहे जिनका मुसलमानों के साथ अपने व्यवहार में हिन्दू प्रदर्शन करते थे।" मुस्लिम संम्प्रदाय वादियों ने इन वर्जनाओं आदि का प्रयोग मुस्लिम मध्यम वर्गों में हिन्दू विरोधी भावनाओ और सांप्रदायिकता की आग को भड़काने के लिए किया। उस समय यह आवश्यक था कि इन सामाजिक वर्जनाओं, विशेषकर इनके भेदभावपूर्ण पहलुओं के विरुद्ध लड़ा जाता और उन्हें समाप्त किया जाता।" 5. हिंदी साहित्य में कई रचनाओं में सांप्रदायिकता का चित्रण दिखाई देता है जिसमे चंद्रकांत के कई उपन्यासों में भी ऐसा चित्र दिखाई देता है। यनक कथा सतीसर, उपन्यास में, कश्मीरी लोग हिन्दू मुस्लिम संस्कृति में पूर्ण रूप से घुल मिल चुके है। वे दोनों एक दूसरे के ईश्वर अल्ला पर विश्वास करते है। मन्नते मांगते है। कथा सतीसर में सिद्धि कहती है-" नानी कॉलेज में मेरी एक कलीग कहती है - कश्मीरी पंडित आधा मुसलमान है।और कश्मीरी मुसलमान आधा हिन्दू।" 6 कश्मीर किसी एक का न होकर साझी विरासत है। प्रेमचंद अपने उपन्यास में कहते है -"दहरम हमारी रक्षा और कल्याण के लिए है। अगर वह हमारी आत्मा को शांति और देह को सुख नही प्रदान कर सकता तो मैं उसे प्रणे कोट की भांति उतार कर फेंकना पसंद करूँगा। जो धर्म हमारी आत्मा का बंधन हो जाये उससे जितनी जल्दी हम

अपना गला छुड़ा ले उतना ही अच्छा।" 7. राही मासूम राजा का उपन्यास आधा गांव में हम देखते है सांप्रदायिक दंगों में जब हिंदूवादी ताकते, मुसलमानों के विरुद्ध भड़काती है तो हिन्दू लाठियां लेकर तरिखपुर वाले मुसलमानों को मारने और उनके घर जलाने के लिए हमला बोलते है।तब गांव के ठाकुर मुसलमानों को बचाते है।-" भीड़ के समझ में नही आ रही थी कि आखिर ठाकुर मुसलमानों को क्यों बचना चाहते है।"8. इस उदा.से न केवल गंगोली की आम जनता की मानसिकता को उजागर करते हैं अपितु भारत के आम आदमी की मानसिकता को भी दर्शाता है। यह हिन्दू मुस्लिम एकता की जड़े गहरी दिखाई देती है। सांप्रदायिकता एक ऐसी चीज है जो बुद्धि का विरोध किये बगैर आगे नही बढ़ सकती। यह यथार्थ का वास्तविक ज्ञान हासिल करने के बजाय अर्ध सत्यों और झूठी अफवाहों पर जिंदा रहती है। वह विवश और जरुन जैसे भावों को उत्तेजना और उन्माद के छोर तक ले जाकर और सहयोग तथा प्रेम जैसे बुनियादी भावो को नष्ट करके मनुष्य को आत्महीन तो बनाती है,बुद्धि और विवेक के प्रखर आध्यात्मिक औजारों से भी वंचित कर देती है।

21वी शताब्दी के इस भूमंडलीकरण के दौर में सांप्रदायिकता के विरुद्ध एक आंदोलन की आवश्यकता है। जो भाषणों तक ही न रहकर व्यवहार में उतरी जानी चाहिए।सामूहिक विवाह,सामुहिक भोज, सामूहिक गोष्ठियां होनी चाहिए।आन्दोलन से हिंसापर रोक लगाई जाएगी।हिन्दू मुसलमान दो हो सकते है। लेकिन राष्ट्रवाद के संदर्भ में वे भारतवासी है।इसप्रकार संवैधानिक मूल्यों के दर्शन होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सांप्रदायिक समस्या (कानपुर दंगा जांच समिति की रिपोर्ट) पृ.159
2. भारत मे उपनिवेशवाद, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद-शिवानी किंकर चौबे, पृ. 197
3. आधुनिक भारत मे उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद-विपिनचन्द्र, प्रु.237-238
4. सांप्रदायिकता के स्त्रोत-गोरख पांडेय,पृ. 196
5. आधुनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद- बिपिनचंद्र, पृ. 246-247
6. कथा सतीसर- चंद्रकांता, पृ. 543
7. रंगभूमि-प्रेमचंद भाग 2 पृ सं. 262 प्रकाशन वर्ष 1991
8. आधा गांव- राही मासूम राजा, पृ. 264